हिंदी-8

अध्याय-1. वर दे

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (ख)

लिखित प्रश्न

1. (क) कवि भारत में स्वतंत्रता भर देने की प्रार्थना कर रहा है। **(ख)** कवि हृदय की अज्ञानता के बंधनों को काट देने की इच्छा रखता है। **(ग)** कवि मन की अपवित्रता, भेदभाव, अंधकार आदि चीज़ों को दूर कर देना चाहता है। **(घ)** इस कविता में 'विहगवृंद' पक्षियों के समूह का प्रतीक है।

2. (क) प्रस्तुत पंक्ति में कवि ज्ञान की देवी सरस्वती से भारत के नागरिकों में स्वतंत्रता के प्रति प्रेम उत्पन्न करने के लिए कह रहा है। **(ख)** कवि ने प्रार्थना की है कि हे देवी! संसार में से झगड़ा, भेदभाव, अंधकार दूर करके ज्ञान के प्रकाश से उसे जगमग कर दें। **(ग)** कवि ने विहगवृंद के लिए नए पर व नए स्वर माँगे हैं ताकि वे खुले आकाश में विचरण कर सकें।

3. भाव—कवि ने देवी सरस्वती से प्रार्थना की है कि हे माता! आप हृदय से अंधकार के बंधनों को काटकर ज्ञानरूपी प्रकाश के झरने को बहा दो अर्थात् अंधकार को दूर कर दो। माता! संसार से झगड़ा, भेदभाव, अंधकार को दूर करके ज्ञान के प्रकाश से जग को भर दो।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) अंबुद = बादल **(ख)** अंबुज = कमल **(ग)** अंबुधि = सागर **(घ)** नीरद = बादल **(ङ)** नीरज = कमल **(च)** नीरधि = समुद्र **(छ)** वारिद = बादल **(ज)** वारिज = कमल **(झ)** वारिधि = सागर

2. (क) दयामय = दया से पूर्ण **(ख)** प्रेममय = प्रेम से पूर्ण **(ग)** प्रकाशमय = प्रकाश से पूर्ण **(घ)** सुखमय = सुख से पूर्ण **(ङ)** शांतिमय = शांति से पूर्ण

3. (क) माता, अंबा, माँ **(ख)** प्रकाश, दीप्ति, रोशनी **(ग)** अंधकार, तिमिर, अँधेरा**(घ)** दुनिया, विश्व, संसार **(ङ)** गगन, अंबर, व्योम

अध्याय-2. ज़मीन की भूख

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (क) 3. (क)

लिखित प्रश्न

1. (क) सरदार ने ज़मीन का भाव एक हजार रुपया प्रतिदिन बताया। **(ख)** दीना को रातभर नींद नहीं आई क्योंकि वह रातभर ज़मीन के बारे में सोचता रहा। **(ग)** खाना खाने के बाद दीना इसलिए नहीं लेटा क्योंकि उसे डर था कहीं नींद न आ जाए। **(घ)** जब उसे टेकड़ी दिखाई नहीं दी, तो उसने सोचा कि वह अधिक दूर निकल आया है।

2. **(क)** दूसरी जगह ज़मीन लेने के बाद भी दीना संतुष्ट इसलिए नहीं हुआ क्योंकि उसे लगने लगा कि वह ज़मीन उसके लिए काफ़ी नहीं है। कुछ और ज़मीन होती, तो कितना अच्छा होता! यह मनुष्य का स्वभाव है कि उसको जितना मिल जाता है, वह उससे अधिक पाने की कामना करने लगता है। **(ख)** दीना ने सरदार तथा उसके साथियों को बहुत से उपहार देकर प्रसन्न किया। **(ग)** दीना अपने लालच के कारण ज़मीन प्राप्त नहीं कर सका और मर गया।

3. प्रस्तुत पंक्ति में मानव स्वभाव के बारे में बताया गया है कि मानव को कितना भी मिल जाए उसे कम ही लगता है तथा वह उससे अधिक पाने की इच्छा करने लगता है।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।

2. स्वयं कीजिए।

3. **(क)** रचित के जन्मदिन पर उसे बहुत से उपहार प्राप्त हुए। **(ख)** पिकनिक पर जाते समय वासू तथा वंशू का उत्साह देखने लायक था। **(ग)** हमें अपने बड़ों तथा अध्यापकों का सम्मान करना चाहिए। **(घ)** सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में लालिमा छा जाती है। **(ङ)** मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस वर्ष बारिश अच्छी होगी।

अध्याय-3. अच्छे नागरिक

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** आदमी की परख बड़ी-बड़ी बातों से उतनी नहीं होती, जितनी छोटी-छोटी बातों से होती है। **(ख)** कार्यकुशलता का पहला अंग यह है कि हम अपने कार्य को अच्छी तरह जानें। **(ग)** हमारे लिए परिश्रम करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि सतत् परिश्रम ही हमें आगे ले जा सकता है। **(घ)** लेखक ने कार्यकुशलता का तीसरा अंग परिश्रम को बताया है।

2. **(क)** देश बड़ा होने के लिए आवश्यक है कि हमारे सभी देशवासी अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझें और उसी के अनुसार कार्य करें। हम किसी श्रेणी अथवा जाति के चक्कर में न पड़ें। इस बात का ध्यान सभी लोग रखें कि देश सबका है, किसी एक व्यक्ति या समूह का नहीं। देश तभी सुदृढ़ रह सकता है, जब सब लोग अपना-अपना कार्य समुचित प्रकार से करें। **(ख)** हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए, जैसा हम उन लोगों से अपने प्रति चाहते हैं। **(ग)** हमको चाहिए कि अपनी बात का सदैव निर्वाह करें, वचन का पालन करें, उधार ली गई वस्तु को उसी हालत में समय पर लौटा दें, रास्ते में गंदगी न फैलाएँ आदि। इसके साथ ही यदि हम परिश्रम और लगन से अपना कार्य करें, तो हम अच्छे नागरिक बन सकते हैं।

3. देश सबका है, किसी एक व्यक्ति या समूह का नहीं, अत: हमें कभी किसी का अपमान नहीं करना चाहिए तथा सभी को एकसमान समझना चाहिए।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** नगरवासी —नगर में वास करने वाला **(ख)** ग्रामवासी —ग्राम में वास करने वाला **(ग)** वनवासी —वन में वास करने वाला **(घ)** जलवासी —जल में वास करने वाला **(ङ)** हिमवासी —हिम में वास करने वाला

2. **(ख)** धार्मिक **(ग)** आर्थिक **(घ)** सामाजिक **(ङ)** मासिक **(च)** वार्षिक**(छ)** साप्ताहिक **(ज)** पाक्षिक

3. **(क)** सदा + एव = वृद्धि संधि **(ख)** उत् + नति = व्यंजन संधि **(ग)** सम् + उचित = व्यंजन संधि **(घ)** नि: + वाह = विसर्ग संधि

अध्याय-4. साइकिल की सवारी

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (क) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** अपने लड़के को देखकर लेखक के मन में अपने प्रति लज्जा और घृणा के भाव आए। **(ख)** लेखक ने साइकिल चलाना सीखने के लिए उस्ताद की तलाश इसलिए कि क्योंकि वे हर काम नियम से करना चाहते थे। **(ग)** जब उस्ताद साहब लस्सी पीने लगे, तो लेखक ने साइकिल के पुरज़ों की ऊपर-नीचे से परीक्षा शुरू कर दी। फिर कुछ जी में आया, तो उसका हैंडिल पकड़कर चलने लगे। **(घ)** अंतिम दिन की दुर्घटना इसलिए हुई क्योंकि ताँगे को अपनी ओर आता देखकर लेखक के हाथ-पाँव फूल गए और बिना हैंडिल घुमाए वे सीधे ताँगे के नीचे जा गिरे।

2. **(क)** लेखक ने जब अपने लड़के को साइकिल चलाते हुए देखा तो उन्हें अपने ऊपर बहुत लज्जा आई। इसलिए लेखक ने साइकिल चलाना सीखने का निश्चय किया। **(ख)** लेखक की स्त्री ने उसे साइकिल चलाना सीखने से इसलिए मना किया क्योंकि उन्हें लेखक के स्वभाव से डर लगता था कि एक बार गिरने के बाद लेखक साइकिल वहीं फेंक-फाँककर आ जाएँगे। **(ग)** पहले दिन लेखक जैसे ही घर से निकले कि बिल्ली रास्ता काट गई और एक लड़के ने छींक दिया। बाजार में जाकर लेखक ने देखा कि जल्दी और घबराहट में वे पाजामा और अचकन दोनों ही उल्टा पहन कर आ गए थे। इसलिए वे बिना साइकिल चलाना सीखे वापस आ गए।

3. जब लेखक ने तिवारी जी से साइकिल चलाना सिखाने के लिए कहा तो तिवारी जी ने लेखक से मना कर दिया लेकिन लेखक ने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली थीं। वे समझ गए तिवारी जी उनके साइकिल चलाने से ईर्ष्या कर रहे हैं।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. स्वयं कीजिए।
3. **(क)** मन में दया पैदा होना —तुषार की दयनीय अवस्था देखकर मकान मालिक का पत्थर दिल पसीज गया। **(ख)** अनुभवहीन होना —हमने कच्ची गोलियाँ नहीं खेली, हम प्रारंभ में ही उसकी चाल समझ गए थे। **(ग)** काम शुरू होते ही उसमें बाधा या रुकावट आ जाना —अक्षय इंटरव्यू के लिए जैसे ही घर से निकला वैसे ही उसके जूते का तला उखड़ गया। इसे कहते हैं सिर मुँडाते ही ओले पड़ना। **(घ)** क्रोध करना —रजत ने दाँत पीसकर अमन से कहा, ''यहाँ से चले जाओ।'' **(ङ)** घबरा जाना —कार के ब्रेक न लगने पर कार में सवार सभी लोगों के हाथ-पाँव फूल गए। **(च)** धोखा देना —चोर पुलिस को चकमा देकर भाग गया।
4. **(क)** वक़्त, काल **(ख)** विचार, मनोवृत्ति **(ग)** पथ, रास्ता **(घ)** दंग, चकित **(ङ)** पट, चीर
5. **(क)** निराशा **(ख)** औरत **(ग)** शागिर्द **(घ)** अयोग्य **(ङ)** अधिक **(च)** अशुभ **(छ)** नापसंद **(ज)** देवता

अध्याय-5. इतने ऊँचे उठो

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **(क)** 2. **(ख)** 3. **(ग)** 4. **(क)**

लिखित प्रश्न

1. **(क)** सारी दुनिया को एक दृष्टि से देखना चाहिए। **(ख)** कवि ने सृजन को मौलिक बताया है। **(ग)** कवि सलोना रूप कुरूप को देना चाहता है। **(घ)** कवि जीवन का चिरंतन सत्य गति को मानता है।
2. **(क)** प्रस्तुत पंक्ति में पृथ्वी पर सभी को एकसमान समझने के लिए कहा है तथा सभी पर समरसता बिखेरने के लिए कहा है। **(ख)** कवि के अनुसार संसार जाति, भेद-भाव, धर्म, वेशभूषा, काला-गोरा, रंग, ईर्ष्या आदि ज्वालाओं से जल रहा है। **(ग)** 'अगर कहीं है स्वर्ग', कवि ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि यदि कहीं स्वर्ग है अर्थात् जहाँ चारों ओर सुख और शांति हो तथा प्रेम का वातावरण हो तो उसे इस धरती पर लाना है अर्थात् ऐसी जगह बनानी है जहाँ सर्वत्र सुख और शांति हो।
3. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि संसार में सभी को एक दृष्टि से देखना चाहिए तथा सभी को एकसमान समझकर उनसे व्यवहार करना चाहिए। संसार में फैले जाति, भेदभाव, धर्म, वेशभूषा, काले-गोरे रंग तथा जलन आदि को मिटाने के लिए एकदम ठंडी हवा की भाँति बहना चाहिए।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** प्रतिशत **(ख)** प्रतिदिन **(ग)** प्रतिमाह **(घ)** प्रतिवर्ष **(ङ)** प्रतिव्यक्ति**(च)** प्रतिसप्ताह

2. **(क)** जग, विश्व, संसार **(ख)** पृथ्वी, भूमि, वसुंधरा **(ग)** ज्योति, लौ, लपट **(घ)** वायु, अनिल, हवा

3. स्वयं कीजिए।

अध्याय-6. राखी का मूल्य

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** महारानी कर्मवती ने यह बात इसलिए कही थी क्योंकि मेवाड़ पर शत्रुओं ने हमला किया था और उनके स्वामी भी नहीं हैं। **(ख)** हुमायूँ रानी कर्मवती द्वारा उसे राखी भेजकर अपना भाई बनाने को अपनी खुशकिस्मती मान रहा था। **(ग)** जब हुमायूँ ने मेवाड़ की तारीफ की, तो हिंदूबेग और तातार खाँ को लगा कि दुश्मन की तारीफ़ करने में उसका कोई सानी नहीं। **(घ)** हुमायूँ एक दयालु, वीर, भाईचारे का पालन करने वाला है।
2. **(क)** मेवाड़ को विपत्ति में देखकर कर्मवती को अपने स्वामी की याद आ रही थी जिनके रहते मेवाड़ की ओर आँख उठाने का साहस भी किसी में नहीं था। **(ख)** जवाहरबाई को कर्मवती का हुमायूँ को राखी भेजने का प्रस्ताव इसलिए पसंद नहीं आया क्योंकि हुमायूँ एक मुसलमान था। **(ग)** बाघ सिंह ने यह बात इसलिए कही क्योंकि वह तो सिर्फ एक योद्धा था। उसका कार्य राजा, महाराजा की आज्ञा का पालन करना था उन्हें राय देना नहीं।
3. प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा लेखक कहना चाहता है कि राजपूतों ने आपसी बैर के कारण अपना सबकुछ खत्म कर लिया क्योंकि वे हमेशा आपस में ही लड़ते रहे और कभी एक नहीं हुए।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** शक्ति **(ख)** सैनिक **(ग)** सेवा **(घ)** भाग्य **(ङ)** सम्मान **(च)** स्वर्ग **(छ)** धार्मिक कट्टरता **(ज)** भाग्यशाली **(झ)** प्रेम **(ञ)** पति **(ट)** सुरक्षा **(ठ)** मिट्टी
2. **उद्देश्य–(क)** राजपूत **(ख)** हुमायूँ, उसका सेनापति हिंदूबेग और तातार खाँ **(ग)** स्वर्गीय महाराणा संग्राम सिंह जी की महारानी कर्मवती जी विधेय–**(क)** वीरता से लड़ रहे हैं। **(ख)** बैठे हैं। **(ग)** ने आपको यह सौगात भेजी है।

अध्याय-7. समाज सेवा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (क) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** संपत्तिवान व्यक्ति आदर का पात्र इसीलिए हो जाता है क्योंकि हम लोग अर्थ सिद्धि में जीवन की सफलता समझते हैं। **(ख)** समाज सेवा वह है, जो किसी व्यक्ति

विशेष को सुख पहुँचाने की दृष्टि से नहीं, वरन् अधिकांश लोगों को अधिकतम सुख पहुँचाने के लिए की जाती है। **(ग)** समाज जब तक दृढ़तापूर्वक किसी नियम का पालन नहीं करेगा, तब तक विचार करके समाज की एक मर्यादा बना दी जाती है। **(घ)** जो व्यक्ति समाज की मर्यादा का उल्लंघन करेगा, वह समाज द्वारा निंदनीय होगा।

2. **(क)** हम लोग हृदय में यही अनुभव करते हैं कि सेवा ही आदरणीय है। तभी तो धनवानों की प्रशंसा में भी हम उनकी देश सेवा, समाज सेवा, जाति सेवा, साहित्य सेवा आदि का उल्लेख करते हैं। मृत्यु के बाद हम किसी के धन, पद, गौरव आदि का विचार ही नहीं करते। **(ख)** मनुष्यों में हम जिन गुणों का विकास देखकर मुग्ध हो जाते हैं, वे सभी गुण उस परार्थ बुद्धि द्वारा प्रकट होते हैं। दया, प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, त्याग, सेवा आदि भाव एकमात्र परार्थ चिंता के कारण हमारे हृदयों में उत्पन्न होते हैं। **(ग)** समाज में दीनों और दुखियों का अभाव नहीं रहता। कुछ लोग अंगहीन होने के कारण असहाय होते हैं। कुछ लोग बिलकुल अनाथ हो जाते हैं। कुछ लोग अज्ञ होते हैं। कुछ लोग कुपथगामी होते हैं।

3. जिस प्रकार मनुष्य में कुबुद्धि होती है, वैसी अच्छी बुद्धि भी होती है मनुष्यों में जिन कार्यों एवं सोच से हम लोग आकर्षित हो जाते हैं वे सारे इसी अच्छी बुद्धि का परिणाम हैं। दया, प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, त्याग, सेवा आदि भाव एकमात्र परार्थ चिंता के कारण हमारे हृदयों में उत्पन्न होते हैं। हमें अपने कल्याण के लिए अपनी उन्नति के लिए अपने सुख के लिए और दूसरों के लिए सुखकर कार्य करने पड़ते हैं।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(ख)** सुंदरतर, सुंदरतम **(ग)** श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम **(घ)** मधुरतर, मधुरतम **(ङ)** उच्चतर, उच्चतम

2. **(क)** आदरणीय **(ख)** धनवान **(ग)** उन्नतिशील **(घ)** कुपथगामी **(ङ)** रोगी

3. **(क)** यथा + इष्ट —गुण संधि **(ख)** स्व + अर्थ —दीर्घ संधि **(ग)** पर + अर्थ — दीर्घ संधि **(घ)** दुर + अवस्था —दीर्घ संधि **(ङ)** अछूत + उद्धार —गुण संधि **(च)** पर + उपकार —गुण संधि

4. **(क)** पराया **(ख)** ह्रास **(ग)** उन्नति **(घ)** अनेकता **(ङ)** परमार्थ **(च)** असंतोष **(छ)** अपकार **(ज)** सुख **(झ)** अज्ञान

अध्याय-8. वापसी

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** गणेशी गजाधर बाबू का नौकर था जो रेलवे स्टेशन पर उनकी देखभाल करता था। **(ख)** गजाधर बाबू स्वभाव से बहुत स्नेही व्यक्ति थे और स्नेह के आकांक्षी भी।

(ग) गजाधर बाबू ने रात का भोजन बनाने की जिम्मेदारी अपनी पुत्री बसंती को दे दी। **(घ)** रात का भोजन बसंती ने जान-बूझकर ऐसा बनाया कि कौर तक न निगला जा सके।

2. **(क)** जब गजाधर बाबू अपने घर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि नरेंद्र कमर पर हाथ रखकर शायद रात की फ़िल्म में देखे हुए किसी नृत्य की नकल कर रहा था, और बसंती हँस-हँसकर दुहरी हुई जा रही थी। **(ख)** बसंती गजाधर बाबू से इसलिए नाराज़ हो गई क्योंकि उन्होंने उसे शीला के घर जाने से मना कर दिया था और पढ़ने के लिए कह दिया था। **(ग)** अंत में गजाधर बाबू ने फैसला किया कि वे सेठ रामजीलाल की चीनी की मिल में नौकरी कर लें क्योंकि उन्हें अपने घर में कोई पसंद नहीं करता था।

3. **भाव**—रिटायरमेंट के बाद जब गजाधर बाबू अपने घर अपनेपन के लिए पहुँचे तो उन्हें वहाँ एक अजनबीपन सा लगा। अपने कमरे में बैठे-बैठे उन्हें अपनी स्थिति उन रेलगाड़ियों के समान लगती जो स्टेशन पर आती और थोड़ी देर रुककर किसी और लक्ष्य की ओर चली जाती थी।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** ममतामयी —ममता से पूर्ण **(ख)** स्नेहमयी —स्नेह से पूर्ण **(ग)** क्षमामयी —क्षमा से पूर्ण **(घ)** तेजमयी —तेज से पूर्ण **(ङ)** त्यागमयी —त्याग से पूर्ण

2. बहू ने अमर से पूछा, ''सिनेमा चलिएगा न?''

   बसंती ने उछलकर कहा, ''भैया, हमें भी।''

   गजाधर बाबू की पत्नी सीधे चौके में गई। फिर बाहर आकर बोली, ''अरे नरेंद्र! बाबू जी की चारपाई कमरे से निकाल दे।

   उसमें चलने तक को जगह नहीं है।''

3. **(क)** अनुभवी **(ख)** सामाजिक **(ग)** प्रतिष्ठित **(घ)** पारिवारिक **(ङ)** हताश **(च)** फूहड़ **(छ)** केंद्रीय **(ज)** आलसी **(झ)** जिम्मा

अध्याय-9. पहरुए सावधान रहना

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** कवि ने 'पहली रत्न हिलोर' स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद की पहली सुबह को कहा है। **(ख)** कवि ने दीप्तिमान रहने के लिए पहरेदारों को कहा है। **(ग)** शत्रु के हट जाने के बाद उनकी छायाओं का डर है। **(घ)** कवि को नई ज़िंदगी के आने का पक्का विश्वास है।

2. **(क)** कवि पहरेदारों को सावधान रहने के लिए इसलिए कह रहा है ताकि देश की स्वतंत्रता को कोई हानि न पहुँचाए। **(ख)** 'खुले देश के द्वार' से कवि का तात्पर्य देश

की आजादी से है। **(ग)** 'प्रथम चरण है नए स्वर्ग का' ऐसा कवि ने इसलिए कहा है क्योंकि यह गुलामी के अंधकार के बाद स्वतंत्रतारूपी स्वर्ग का पहला दिन है।

3. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने स्वतंत्रता के बाद के समय का वर्णन किया है। कवि कहता है कि हमने स्वतंत्रता प्राप्त कर ली है लेकिन आगे का रास्ता बहुत कठिन है। शत्रु चला गया है लेकिन अभी भी उसके प्रभाव का डर है। भारतीय समाज का इतना अधिक शोषण किया गया है कि वह मृतक के समान हो गया है। इस प्रकार हमारा घर ही कमजोर है लेकिन स्वतंत्रता के बाद इस मृतक समाज में नई ज़िंदगी आ रही है यह हमारा विश्वास है। लोगों के समूहों में उत्साह तथा विश्वास की नई लहरें उठ रही हैं। तुम भी इन लहरों के समान प्रवहमान रहना। हे! देश के पहरेदारों! तुम सावधान रहना।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** शक्तिमान **(ख)** गतिमान **(ग)** कीर्तिमान **(घ)** प्रवाहमान **(ङ)** श्रीमान**(च)** बुद्धिमान

2. **(क)** निशा, रजनी, रात्रि, यामिनी **(ख)** जलधि, सागर, समुद्र, वारिधि **(ग)** चंद्रमा, शशि, सुधाकर, रजनीश **(घ)** रास्ता, पथ, मार्ग, राह

अध्याय-10. भारत एक है

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (क) 5. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** लेखक के अनुसार प्रकृति ने भारत के तीन खंड किए हैं। **(ख)** कश्मीर की जलवायु लगभग मध्य एशिया की जलवायु के समान ही है। **(ग)** भारत के दक्षिणी छोर पर कुमारी अंतरीप है, जहाँ के घरों की रचना और लोगों के रूप-रंग आदि में श्रीलंका का नमूना शुरू हो जाता है। **(घ)** भारत के थार की मरुभूमि में वर्षा नाममात्र को ही होती है।

2. **(क)** इस देश के तीन भाग प्राकृतिक दृष्टि से बिलकुल स्पष्ट हैं। सबसे पहले तो भारत का उत्तरी भाग ही है, जो लगभग हिमालय के दक्षिण से लेकर विंध्याचल के उत्तर तक फैला हुआ है। उसके बाद विंध्य से लेकर कृष्णा नदी के उत्तर तक का वह भाग है, जिसे हम दक्खिनी पठार कहते हैं। इस पठार के दक्षिण में कृष्णा नदी से लेकर कुमारी अंतरीप तक का जो भाग है, वह प्रायद्वीप जैसा है। **(ख)** चंद्रगुप्त, अशोक, विक्रमादित्य और उनके बाद मुगलों ने भी इस बात के लिए बड़ी कोशिश की कि किसी तरह सारा देश एक शासन के अधीन लाया जा सके; और उन्हें इस कार्य में सफलता भी मिली। **(ग)** जलवायु और क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार ही लोगों के पहनावे-ओढ़ावे और खान-पान में भी भेद हो जाता है, जो भेद भारत में बहुत ही प्रत्यक्ष है।

3. **(क)** भाव-भारत में भाषाओं के भेद की समस्या बहुत विकट है क्योंकि यहाँ अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। इसी कारण लोग आपस में अजनबी बन जाते हैं और इस समस्या का हल तभी निकलेगा जब सभी स्थानों पर

भाषाओं का आदान-प्रदान हो अर्थात् हिंदीभाषी क्षेत्रों में अहिंदी भाषाओं तथा अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी भाषा का प्रचार किया जाए। **(ख)** भाव-भारत का अधिकांश प्राचीन साहित्य संस्कृत और प्राकृत भाषा में लिखा गया है। इन्हीं दोनों भाषाओं से अन्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। इसलिए इन दोनों भाषाओं का प्रभाव भारत की अन्य सभी भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. **(क)** क्रीड़ास्थल **(ख)** प्रायद्वीप **(ग)** अदूरदर्शी **(घ)** अनुयायी **(ङ)** हिंदुस्तानी **(च)** अग्रज
3. **(क)** हिम् + आलय —दीर्घ संधि **(ख)** विंध्य + अचल —दीर्घ संधि **(ग)** अधिक + अंश —दीर्घ संधि **(घ)** विक्रम + आदित्य —दीर्घ संधि **(ङ)** यदि + अपि —यण संधि।

अध्याय-11. प्रायश्चित

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ग) 3. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** रामू को रूखा-सूखा भोजन इसलिए मिलता था क्योंकि कबरी बिल्ली सारा भोजन चट कर जाती थी। **(ख)** पंडित परमसुख चौबे छोटे-से मोटे आदमी थे। कहा जाता है, मथुरा में जब पंसेरी खुराक वाले पंडित को ढूँढ़ा जाता था, तो पंडित परमसुख को उस लिस्ट में प्रथम स्थान दिया जाता था। **(ग)** पंचायत के पंच थे- सास जी, मिसरानी जी, किसनू की माँ, छुन्नू की दादी और पंडित परमसुख। **(घ)** अंत में महरी ने सूचना दी कि बिल्ली तो उठकर भाग गई।
2. **(क)** रामू की बहू अपराधिनी की भाँति सिर झुकाए इसलिए बैठी थी क्योंकि उसने कबरी बिल्ली की हत्या कर दी थी। **(ख)** बिल्ली की हत्या की खबर बिजली की तरह पास-पड़ोस में फैल गई। पड़ोस की औरतों का रामू के घर ताँता बँध गया। चारों तरफ़ से प्रश्नों की बौछार और रामू की बहू सिर झुकाए बैठी है। **(ग)** पंडित परमसुख चौबे छोटे-से, मोटे-से आदमी थे। लंबाई चार फुट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठावन इंच। चेहरा गोल-मटोल, बड़ी-बड़ी मूँछें, रंग गोरा, गोखुरी चोटी कमर तक पहुँची हुई।
3. भाव-कबरी बिल्ली के कारण रामू की बहू की जान आफ़त में आ गई थी क्योंकि कबरी बिल्ली मौका मिलते ही सब चट कर जाती थी। उसके तो मजे ही मजे थे।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** पंडित परमसुख के चेहरे पर धुँधलापन आया। **(ख)** उनके माथे पर बल पड़े। **(ग)** उन्होंने नाक सिकोड़ी। **(घ)** उनका स्वर गंभीर हो गया।
2. **(ख)** हथिनी **(ग)** मालिन **(घ)** मानिनी **(ङ)** स्वामिनी **(च)** दुखिया।

3. **(क)** युद्ध की तैयारी करना —कौरवों की सेना आने पर पांडवों की सेना ने भी मोर्चाबंदी कर ली। **(ख)** उत्साह दिखाना —भारतीय सैनिकों की सरगरमी देखकर दुश्मन भयभीत होकर भाग गए। **(ग)** झगड़े की जड़ ही मिटा देना —अमिताभ ने अपने पुत्र को झगड़ा करने पर घर से अलग कर दिया क्योंकि न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी। **(घ)** पूरी लगन दिखाना —सफलता प्राप्त करने के लिए हमें कमर कस लेनी चाहिए। **(ङ)** बेकार वस्तु —पैसा तो हाथों का मैल है। उसके पीछे भागना फिजूल है।

अध्याय-12. वीर बालक

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** बलकरन की माँ कल्याणी थी। **(ख)** चौधरी दादा कल्याणी को तलघर में ले गए थे। **(ग)** तैमूर ने सिपाहियों को बाहर इसलिए छोड़ दिया था क्योंकि वह देखना चाहता था कि उसके सिपाही उसके हुक्म का पालन किस प्रकार करते हैं। **(घ)** तैमूर तीन दिन से भूखा था।
2. **(क)** बलकरन ने दूध लाने के लिए माँ से आग्रह इसलिए किया क्योंकि सुजान दूध लेकर आया नहीं था और उसका घर पास ही था। इसलिए बलकरन ने अपनी माँ से कहा कि वह दूध लेकर शीघ्र ही आ जाएगा। **(ख)** ग्रामीणों ने कल्याणी से भाग चलने के लिए इसलिए कहा क्योंकि उनके गाँव में तैमूर अपनी सेना के साथ आ गया था। **(ग)** तैमूर ने अपने सरदार एवं सिपाहियों को इसलिए लताड़ा क्योंकि वे लूटपाट करने के बजाय मिठाइयाँ खा रहे थे और कहकहे लगा रहे थे।
3. **(क) भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियाँ उस समय की हैं जब तैमूर बलकरन के घर में घुस जाता है और बलकरन उससे पूछता है कि वह कौन है? तैमूर बलकरन से कहता है कि जिस तैमूर के पैरों में पूरी दुनिया झुक चुकी है वह उससे पूछ रहा है कि तुम कौन हो? तैमूर आगे कहता है कि वह उसकी तलवार से पूछे कि वह कौन है तो तलवार उसके खून में डूबकर उसका नाम बताएगी। **(ख) भावार्थ**—तैमूर बलकरन से कहता है कि वह हिंदुस्तान की दौलतों में से एक है। हिंदुस्तान में बहुत कीमती हीरे-जवाहरात, सोना-चाँदी तथा अन्य बहुत से खजाने हैं। बलकरन भी उसी के समान एक आभूषण है जो गाजी तैमूर से बिलकुल नहीं डरा।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए। 2. स्वयं कीजिए।
3. **(क)** तरक्की करना —भगवान करें आप अच्छी प्रकार फले-फूले। **(ख)** तेजी से उन्नति करना —कड़ी मेहनत से रविश दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। **(ग)** पाँव छूना—बुजुर्गों के कदमों को चूमकर हम आगे बढ़ सकते हैं। **(घ)** मार देना —अशोक ने ना जाने कितने लोगों के खून से अपनी तलवार को रँगा है।

अध्याय-13. पथ की पहचान

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (क)

लिखित प्रश्न

1. (क) पुस्तकों में सफलता के किसी मार्ग की कहानी नहीं लिखी गई है। **(ख)** जीवन में सफल होने के लिए मन में यह विश्वास होना चाहिए कि जिस रास्ते पर हम चल रहे हैं वह सही है। **(ग)** इस कविता में 'सुमन' सफलता के प्रतीक हैं। **(घ)** कवि पथिक से यह आन करने को कह रहा है कि मार्ग में चाहे कितनी मुसीबतें आ जाएँ वह नहीं रुकेगा।

2. (क) 'यह निशानी मूक होकर भी बहुत कुछ बोलती है,' यहाँ कवि सफलता के मार्ग की निशानी की बात कर रहा है। **(ख)** 'अनगिनत राही गए इस राह से,' यहाँ कवि सफलता की राह की ओर संकेत कर रहा है। **(ग)** काँटें हमें यह सीख देते हैं कि हम चाहे कितनी सफलता प्राप्त कर लें हमारे पाँव जमीन पर होने चाहिए।

3. भावार्थ—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि सपने में स्वर्ग दिखाई देता है तथा आँखों के झरोखों से प्रकाश आता हुआ दिखाई देता है। यह देखकर हमारे पैरों में पंख लग जाते हैं और हृदय उन्मुक्त हो जाता है अर्थात् जब हमें सफलता दिखाई देती है तो हमारी गति मंजिल की ओर बहुत तेज हो जाती है। तभी रास्ते में एक काँटा पाँव को चीर देता है तथा रक्त की दो बूँदें गिर जाती हैं। इससे एक सीख मिलती है कि चाहे हमारी आँखों में स्वर्ग हो लेकिन हमारे पैर पृथ्वी पर ही रहने चाहिए। हमें काँटों द्वारा दी गई इस सीख का सम्मान करना चाहिए। अत: हे राही, तू चलने से पहले अपने मार्ग की पहचान कर ले।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. (क) पंथी, राही, पथिक **(ख)** मार्ग, रास्ता, पथ **(ग)** पर्वत, पहाड़, शैल **(घ)** बगीचा, उपवन, उद्यान **(ङ)** पुष्प, कुसुम, फूल।

2. (ख) अनपढ़ —जो पढ़ा-लिखा न हो। **(ग)** अनजान —जो कुछ नहीं जानता **(घ)** अनदेखा —जिसे देखा न गया हो। **(ङ)** अनचाहा —जिसे चाहा न गया हो।

3. (क) प्रत्येक कार्य को करने के पीछे हमारा ध्येय स्पष्ट होना चाहिए। **(ख)** कंटक के साथ पुष्प भी होते हैं। **(ग)** शकुंतला की सुंदरता पर राजा दुष्यंत मुग्ध हो गए। **(घ)** अब पछताना व्यर्थ है क्योंकि रेलगाड़ी नियत समय पर चली गई। **(ङ)** सहसा एक अजीब-सा जानवर जंगल में दिखाई दिया।

अध्याय-14. अकबरी लोटा

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** लाला झाऊमल ने अपनी पत्नी से वादा किया कि वे सात दिन में उसे ढाई सौ रुपए दे देंगे। **(ख)** लाला झाऊमल ने अपना वादा पूरा करने के लिए पंडित बिलवासी मिश्र से मदद माँगी। **(ग)** पं. बिलवासी मिश्र ढाई सौ रुपए अपनी पत्नी की संदूकची से चुराकर लाए थे। **(घ)** पं. बिलवासी मिश्र हाज़िरजवाब, बुद्धिमान तथा व्यवहारकुशल व्यक्ति थे।
2. **(क)** लाला झाऊमल की पत्नी उनके लिए पानी जिस लोटे में लाई थी उसकी बेढंगी सूरत उन्हें सदा से नापसंद थी इसलिए उन्हें उसे देखकर गुस्सा आ गया था। **(ख)** लाला झाऊमल को अपने मित्र पर गुस्सा इसलिए आ रहा था क्योंकि वे उस अंग्रेज के सामने ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे उन्हें जानते ही न हों। **(ग)** अंग्रेज ने 'जहाँगिरी अंडे' का जो इतिहास बताया वह बिलकुल गलत था क्योंकि कोई भी अंडा ज्यादा दिन तक सही नहीं रह सकता। वह तो केवल उस अंग्रेज को बेवकूफ बनाने के लिए बताया गया था।
3. **(क) भाव**—प्रस्तुत पंक्ति में जिस समय का वर्णन है उस समय ढाई सौ रुपये बहुत बड़ी रकम होती थी तथा ढाई सौ रुपये एक साथ देखना बहुत बड़ी बात होती थी।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. **(क) पूरी तरह हार जाना** —उमेश यादव की गेंदबाजी के आगे विपक्षी टीम चारों खाने चित्त हो गई। **(ख) चुपचाप निकल जाना** —पुलिस को देखते ही जेबकतरा दुम दबाकर निकल गया। **(ग) सामने आना** —यदि गलत कार्य करते हुए पकड़े जाओगे तो घरवालों को क्या मुँह दिखाओगे? **(घ) एक बात पर टिक जाना** —मर्द की एक बात होती है इसलिए अपनी बात से मत पलटो। **(ङ) ऊब जाना** —रवि की बातें सुन-सुनकर निधि के कान पक गए।
3. **(क) शब्द भंडार** — शब्द-संग्रह हिन्दी साहित्य का कोश बहुत विशाल है। **खजाना** — राजा की फिजूलखर्ची के कारण राज्य का कोष खाली हो गया है। **(ख) प्रतिष्ठा** —बेटों ने अपनी काली करतूतों से अपने पिता की साख मिट्टी में मिला दी। **शाखा** —पेड़ों की शाखाओं पर सुंदर फूल लगे हुए हैं। **(ग) सरोवर** —सरवर सँवरि हंस चलि आए। **शर** —महाभारत में भीष्म पितामह अपने अंतिम समय में शर-शय्या पर लेटे हुए थे।
4. **(क)** सुखकर, सुखदायक **(ख)** मनुष्य, पुरुष **(ग)** व्यवस्था, इंतजाम **(घ)** सम्मान, शिष्टाचार **(ङ)** कर, हस्त
5. **(क)** दुःखद **(ख)** विषाद **(ग)** रात **(घ)** नवीन **(ङ)** दुर्जन **(च)** अविश्वास **(छ)** विपक्ष **(ज)** असमर्थ

अध्याय-15. निराश होने की बात नहीं

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (क) 3. (ग)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को अधिक महत्व नहीं दिया है। **(ख)** लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं। **(ग)** भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आया है। **(घ)** नौजवान बस के ड्राइवर को इसलिए पीटना चाहते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि उसने और कंडक्टर ने मिलकर जानबूझकर बस को सुनसान स्थान पर रोका था और कंडक्टर को डाकुओं को बुलाने के लिए भेज दिया था।
2. **(क)** इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है। **(ख)** सामाजिक विधि निषेधों से लेखक का तात्पर्य सामाजिक कायदे-कानून से है। **(ग)** दोषों का पर्दाफ़ाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना रस लेकर उजागर न करना और बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोकचित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।
3. **(क) भाव**—प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक कहता है कि आज सभी लोग दोषी अधिक दिखाई दे रहे हैं। भारतवर्ष आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय तथा भारतीय आदर्शों की मिलन भूमि रहे हैं। यहाँ सभी संस्कृतियाँ मिलकर एक नया भाईचारा बनाती हैं। लेकिन अब ऐसा नहीं है। हर कोई दूसरे को अधिक दोषी मान रहा है तथा आपस में कोई विश्वास नहीं करते।
4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** व्यक्तिवाचक **(ख)** भाववाचक **(ग)** द्रव्यवाचक **(घ)** व्यक्तिवाचक
2. **(क)** प्रति + आरोप —यण संधि **(ख)** वात् + आवरण —दीर्घ संधि **(ग)** दोष + उद्घाटन —गुण संधि **(घ)** निः + जन —विसर्ग संधि
3. **(क)** आरोप तथा प्रत्यारोप —द्वंदव समास **(ख)** महान है जो समुद्र —कर्मधारय समास **(ग)** विश्वास के साथ घात —तत्पुरुष समास।
4. **(क)** ईमानदारी **(ख)** सुखी **(ग)** गुणी **(घ)** महानता **(ङ)** संयमी **(च)** मानवता **(छ)** दीनता **(ज)** पवित्रता

अध्याय-16. भोलाराम का जीव

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क)

लिखित प्रश्न

1. (क) धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास-स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे। **(ख)** यमदूत बदहवास अवस्था में लौटा। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। **(ग)** भोलाराम अपने परिवार के साथ जबलपुर शहर में घमापुर मोहल्ले में नाले के किनारे एक-डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में रहता था। **(घ)** भोलाराम को रिटायर हुए पाँच साल हो गए थे।

2. (क) चित्रगुप्त ने खीझकर रजिस्टर इतने जोर से बंद किया कि मक्खी चपेट में आ गई। **(ख)** धर्मराज को गुमसुम बैठे देख नारद जी बोले, ''क्यों धर्मराज, कैसे चिंतित बैठे हैं? क्या नरक में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई?'' **(ग)** चपरासी ने नारद जी को समझाते हुए कहा—''महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए? आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर दिया, तो अभी काम हो जाएगा।''

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।

2. (क) गुर्राना **(ख)** चलकर **(ग)** ध्यानपूर्वक **(घ)** रखना **(ङ)** ऊँघना

3. स्वयं कीजिए।

अध्याय-17. किसको नमन करूँ मैं

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (क) **3.** (ख)

लिखित प्रश्न

1. (क) 'भेदों का ज्ञाता' भारत देश को कहा गया है। **(ख)** पृथ्वी का विभाजन पर्वतों, नदियों तथा सागरों के द्वारा किया गया है। **(ग)** भारत के लोग लोगों के जीवन में प्रेम घोल रहे हैं।

2. (क) 'मेरे प्यारे देश! देह या मन को नमन करूँ मैं?' इस पंक्ति में देह शब्द भारत की भू-आकृतियों के लिए आया है। **(ख)** कवि ने भारत को 'भू के मानचित्र पर अंकित त्रिभुज' इसलिए कहा है क्योंकि भारत का आकार त्रिभुजाकार है। **(ग)** भारत को भूमंडल भर का शील इसलिए कहा गया है क्योंकि भारत अपनी विनम्रता के कारण पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। **(घ)** इस कविता का मूल भाव भारत का महान गौरव और अनुपम विशिष्टता है।

3. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों में कवि भारत की अनुपम विशिष्टताओं का वर्णन करते हुए कहता है कि भारत अपनी स्थिति को प्रकट करने वाला नहीं है बल्कि इसमें एक विशेष मनुष्य के समान गुण हैं। यह अपनी विनम्रता के लिए पूरे संसार में प्रसिद्ध है। विश्व में जहाँ कही भी एकता तथा प्रेम है वहाँ भारत सूर्य के समान चमक रहा है। यह संपूर्ण विश्व में प्रेम तथा त्याग की जन्मभूमि है। इस भारत की मैं वंदना करता हूँ तथा इसका नमन करता हूँ।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. **(क)** नदी + ईश —दीर्घ संधि **(ख)** नभः + चरण —विसर्ग संधि **(ग)** द्वीप + अंतर —दीर्घ संधि **(घ)** वात + अयन —दीर्घ संधि

2. **(क)** महामानव —बड़ा मानव **(ख)** महाशोक —बड़ा शोक **(ग)** महारोग —बड़ा रोग **(घ)** महाबली —बड़ा बली **(ङ)** महानगर —बड़ा नगर।

3. **(क)** युद्धभूमि —वह भूमि जहाँ युद्ध होता है। **(ख)** कर्मभूमि —वह भूमि जहाँ कर्म किया जाता है। **(ग)** मातृभूमि —माता के समान प्रिय अपनी जन्मभूमि। **(घ)** पितृभूमि— पिता अथवा पूर्वजों के रहने की भूमि। **(ङ)** देवभूमि —वह भूमि जहाँ देवता निवास करते हैं। **(च)** रंगभूमि —वह भूमि जहाँ कलाकार अपना कार्य करते हैं।

4. **(क)** मादा **(ख)** अचिर **(ग)** आग **(घ)** जड़ **(ङ)** अखंडित **(च)** शत्रु **(छ)** भगिनि **(ज)** अनेकता

5. स्वयं कीजिए।

अध्याय-18. स्वर्ण मरीचिका

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख) 5. (ख)

लिखित प्रश्न

1. **(क)** भीड़ में एक भगत निराला निकला। वह आते ही हाथ जोड़कर एक पाँव पर खड़ा हुआ, सौ पखवाड़े तक बुत की तरह खड़ा रहा। न कुछ माँगा, न कुछ बोला। **(ख)** जब भगत ने महात्मा जी से कहा, ''मुझे न स्वर्ग चाहिए और न मोक्ष। हम दुनियादारों के लिए स्वर्ग-नरक यहीं हैं। हाथ में खूब सारा पैसा हो, तो यह दुनिया स्वर्ग से भी बढ़कर है। मैं इसी जनम में जीने का मज़ा लूटना चाहता हूँ। बेशुमार सोने की कामना है, पूरी करें।'' यह सुनकर महात्मा जी को धक्का लगा। **(ग)** पारस देते हुए महात्मा जी ने ताकीद की, ''पखवाड़ा बीतते ही मैं पारस लेने के लिए आ जाऊँगा। एक पल भी और नहीं मिलेगा।'' **(घ)** भगत एक बनिए के पास इसलिए गया ताकि वह अधिक से अधिक लोहा मँगा सके जिसे वह सोने में बदल ले। **(ङ)** महात्मा पर नज़र पड़ते ही भगत की सारी दृढ़ता जाती रही। आदमी को देखकर आदमी के कलेजे में कभी ऐसी आग नहीं भड़की होगी। उसकी आँखों के सामने समूची दुनिया धू-धू जलने लगी।

2. **(क)** जब भगत ने महात्मा जी से कहा, ''मुझे न स्वर्ग चाहिए और न मोक्ष। हम दुनियादारों के लिए स्वर्ग-नरक यहीं हैं। हाथ में खूब सारा पैसा हो, तो यह दुनिया स्वर्ग से भी बढ़कर है। मैं इसी जनम में जीने का मज़ा लूटना चाहता हूँ। बेशुमार सोने की कामना है, पूरी करें।'' यह सुनकर महात्मा जी को धक्का लगा। **(ख)** बूढ़ी माँ ने कहा, ''बेटे, घर का लोहा ही काफ़ी है। तू अपार लोहे का लालच मत कर। हाथ आए पारस को अभी बरत ले, तो अच्छा है। घर की चीज़ बत्ती को तू कम मत समझ। एक दफ़ा इन्हें सोने का देख लूँ, तो मेरी मुक्ति हो जाए। मेरा कहा मान, और देर मत कर। इस पारस को अभी बरत ले।'' **(ग)** भगत ने बनिये को समझाने की चेष्टा की कि सोने में बदलने के लिए अधिक से अधिक गाड़ियाँ लोहा भरकर मँगाए। **(घ)** अंतिम दिन महात्मा के पैर पकड़कर भगत ने प्रार्थना की कि उसे थोड़ी-सी मोहलत और दे दें जिससे वह लोहे को सोने में बदल ले।

3. **(क) भावार्थ**—धन के लिए गृहस्थ उसी प्रकार तपस्या करते हैं जिस प्रकार साधु भगवान की भक्ति करते हैं। वे पैसों को अपने प्राणों से अधिक चाहते हैं तथा उसे पाने के लिए अनेक कष्ट सहते हैं लेकिन फिर भी उसका पीछा नहीं छोड़ते। **(ख)** भावार्थ—भगत अपने लालच के कारण पारस पत्थर का प्रयोग नहीं कर पाया क्योंकि वह लोहे से भरी गाड़ियों की प्रतीक्षा कर रहा था लेकिन अंतिम क्षण बीत जाने पर जब उसने महात्मा जी को आते हुए देखा तो उसके कलेजे की आग भड़क उठी तथा उसकी आँखों के सामने उसकी दुनिया धूँ-धूँ करके जल उठी। **(ग) भावार्थ**—भगत को पारस पत्थर मिला था जिसे छूते ही लोहा सोना बन जाता था लेकिन भगत अपने लालच के कारण उस पत्थर का प्रयोग नहीं कर पाया और समय बीत गया तथा महात्मा जी पारस पत्थर को अपने साथ ले गया। यह देखकर भगत की स्थिति न तो मरने वालों में रही और न ही जीने वालों में।

4. स्वयं कीजिए।

भाषा और व्याकरण

1. स्वयं कीजिए।
2. **(क)** दर्शन **(ख)** भक्त **(ग)** जन्म **(घ)** गृहस्थी **(ङ)** स्पर्श **(च)** वचन
3. **(क)** निरर्थक **(ख)** अदृश्य **(ग)** लालची **(घ)** अमूल्य **(ङ)** अडिग
4. **(क)** एक के बाद एक आना—विराट के आउट होते ही विकेटों का ताँता लग गया। **(ख)** स्थिर और मौन रह जाना—बुत की तरह क्यों खड़े हो? जाकर अपना काम करो। **(ग)** मचलना—रोहित की बात सुनकर अमित का जी कसमसाने लगा। **(घ)** सिर चकराना—भूकंप के आते ही सबके सर में ज्वार आ गया। **(ङ)** हालत खराब होना—पूरे दिन परिश्रम करके रमन की हालत खस्ता हो गई।
5. स्वयं कीजिए।
6. स्वयं कीजिए।